सहायक ग्रंथ सूची

1. खैरनार, राजेंद्र - इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श और दलित विमर्श जगत भारती प्रकाशन, संस्करण 2016
2. पुन्नीसिंह, प्रसाद कमला, शर्मा राजेन्द्र- भारतीय दलित साहित्य:परिप्रेक्ष्य- वाणी प्रकाशन, संस्करण 2003
3. रवोब्रागडे, मुंशी एन.एल- मध्यप्रांत में दलित आन्दोलन का इतिहास- मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी
4. शर्मा, प्रो. श्रीराम- समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श- वाणी प्रकाशन
5. चंचरिक आर. चन्द्रा, कन्हैयालाल- आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन - यूनिवेर्सिटी पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2003
6. सत्यप्रेमी , डॉ. पुरुषोत्तम- दलित साहित्य सृजन के संदर्भ में- कामना प्रकाशन, संस्करण 1999
7. सं. शरण गिरिराज- दलित जीवन की कहानियाँ - प्रभात प्रकाशन, संस्करण 2002
8. डॉ. वी.एस, नीरजा - ममता कालिया की कहानियों में नारी- अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2017
9. राठौड़, नारायण - सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित जीवन - जवाहर पुस्तकालय, संस्करण 2007
10. गुप्त , शंभू - कहानी समकालीन चुनौतियाँ - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009
11. पलिवाल , सूरज - इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिन्दी कहानी- वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012

12. दूबे, संजीव कुमार - हिंदी कहानी और सांप्रदायिकता - मेधा बुक्स, प्रथम संस्करण 2012
13. भट्टाचार्य ,श्रावणी - अंतिम दशक के महिला कहानीकारों के बदलते सामाजिक संदर्भ - अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2017
14. के. वी ,विजयश्री - स्त्री का प्रतिरोध:चित्रा मृदुगल के उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी में' - जवाहर पुस्तकालय, संस्करण 2010
15. डॉ. यादव ,वीरेन्द्र सिंह - इक्कीसवीं सदी का महिला सशक्तिकरण:मिथक एवं यथार्थ - ओमेगा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2010
16. डॉ. पवार शोभा - हिन्दी कहानी और नारी विमर्श के अहम सवाल - अन्नपूर्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009
17. गुप्ता , कमलेश कुमार - भारतीय महिलाएँ, शोषण, उत्पीडन, एवं अधिकार -बुक एलक्लेव, प्रथम संस्करण 2005
18. डॉ. के, संगीता - नारी चेतना की सार्थक तलाश -जवाहर पुस्तकालय, प्रथम संस्करण 2013
19. डॉ. शुक्ला, अज्जू - आधुनिक नारी एवं महिला सशक्तिकरण -अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
20. डॉ. धर्मवीर - डॉ. अंबेडकर के प्रशासनिक विचार वाणी - प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004
21. दूबे, अभय कुमार - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2002
22. डॉ.लिम्बाले, श्रवणकुमार - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000

23. गुप्ता, रमणिका - दलित चेतना (साहित्य)- नवलेखन प्रकाशन, हजारीबाग, प्रथम संस्करण-1996
24. डॉ. अग्रवाल, गिरिजाशरण - दलित जीवन की कहानियाँ - लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1998
25. सं. चतुर्वेदी जगदीश्वर, सुधासिंह - स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा आनन्द प्रकाशन, कोलकत्ता, प्रथम संस्करण-2004
26. राधाकुमार - स्त्री संघर्ष का इतिहास - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2002
27. गुप्ता, ऊर्मिला - हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग -राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1996
28. डॉ. लिंबाले शरणकुमार - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000
29. भारती, कँवल - दलित साहित्य की अवधारणा - बोधिसत्व प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006,
30. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति 2009,
31. संपादक डॉ. भण्डारे, मनोहर - दलित साहित्य समग्र परिदृश्य - स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013,
32. एन. सिंह - मेरा दलित चिंतन - कंचन प्रकाशन - संस्करण 1998,
33. जोशी ,गोपा - भारत में स्त्री असमानता - संशोधित संस्करण दिसम्बर, प्रथम संस्करण 2006
34. भारती, अनिता - समकालीन नारीवाद और दलित स्त्री का प्रतिरोध - स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013

35. बडत्या, सूरज - सत्ता संस्कृति और दलित सौन्दर्यशास्त्र - अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010,
36. 'मीनू', रजत रानी - हिन्दी दलित कथा साहित्य: अवधारणाएं और विधाएं - अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010
37. वर्मा, धीरेन्द्र - हिन्दी साहित्य कोश (भाग एक) - पारिभाषिक शब्दावली मुद्रक प्रकाश ज्ञानमंडल, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1985
38. डॉ. पाण्डेय, मैनेजर - साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका - हरियाणा साहित्य अकादमी, तृती संस्करण 2006
39. एस. विक्रम - दलित महिलाएँ : इतिहास, वर्तमान और भविष्य - श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010
40. सं. डॉ. मंजू सुमन, सं. ज्ञानेन्द्र रावत - दलित महिलाएँ सम्यक -प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004,
41. संकलन डॉ. मंजू सुमन, संपा. ज्ञानेन्द्र रावत - दलित नारी एक विमर्श सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2009,
42. संपादक डॉ. सर्राफ, रामकली - दलित लेखन का अंतर्विरोध - शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2012
43. पांडे, मृणाल - स्त्री देह की राजनीति में देश की राजनीति - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
44. प्रसाद, गंगा विमल - समकालीन कहानी का रचना विधान - सुषमा पुस्तकलाय, दिल्ली,1967
45. मधुरेश -हिन्दी कहानी : अस्मिता की तलाश - आधार प्रकाशन, पंचकुला, 1991
46. वर्मा, अर्चना - अस्मिता - विमर्श का स्त्री स्वर -मेधा बुक्स, दिल्ली, 2008

47. शैलजा -समकालीन हिन्दी कहानी, बदलते जीवन-संदर्भ - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
48. चतुर्वेदी, जगदीश्वर -स्त्रीवादी सीहित्य विमर्श -अनामिका पब्लिशर्स, दरियागंज, दिल्ली, 2002
49. शरण, गिरिराज - नारी उत्पीड़न की कहानियाँ - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1986
50. यादव, राजेंन्द्र -औरत अस्तित्व एवं अस्मिता - सारांश प्रकाशन, दिल्ली, 2000
51. कुमार, आर मनोज और प्रेमचंद एम. कोराली - भारतीय दलित साहित्य-दर्पण प्रकाशन, 2000.
52. कृष्णकांत, सुमन - इक्कीसवीं सदी की ओर -राजकमल प्रकाशन, 2001.
53. किशोर, कौशल -प्रतिरोध की संस्कृति -परिकल्पना प्रकाशन, 2018.
54. सांभरिया,रत्नकुमार - दलित समाज की कहानियां - अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.)लिमिटेड, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011
55. रामनरेशराम - दलित स्त्रीवाद की आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति - नयी किताब, नवीन शाहदरा दिल्ली- 110032 प्रथम संस्करण 2013
56. रावत, ज्ञानेन्द्र - दलित नारी एक विमर्श - सम्य प्रकाशन, नई दिल्ली-63, प्रथम संस्करण 2004
57. डॉ.'स्नेही', कालीचरण - हिन्दी साहित्य में दलित अस्मिता - प्रकाशन-आराधना ब्रदर्स, प्रथम संस्करण 2004
58. प्रो. शर्मा, राजमणि - दलित चेतना की कहानियाँ बदलती परिभाषाएँ - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2008
59. नारायण, बद्री - दलित वैचारिकी की दिशाएँ - राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2008

60. प्रसाद, माता - दलित साहित्य दशा और दिशा - प्रकाशक-भारतीय दलित साहित्य अकादमी

61. डॉ. आर. एम. एस विजयी - शोषित समाज की दशा और दिशाःसमग्र मूल्यांकन-आकांक्षा प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2000

62. जालान, विमल इक्कीसवीं सदी में भारतीय अर्थ व्यवस्था प्रभात प्रकाशन, दिल्ली- 110002, संस्करण- 2008

63. देवसरे विभा - घरेलू हिंसा : वैश्विक संन्दर्भ - आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली - 110031

64. थोरात, विमल - दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर - अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, प्रा. लि नई दिल्ली - 110002

65. मोहन सुरेंन्द्र - वर्तमान राजनीति की ज्वलंत चुनौतियाँ - अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, प्रा. लि नई दिल्ली - 110002, पहला संस्करण-2011

66. शर्मा सुभाष - संस्कृति और समाज - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-110003, पहला संस्करण- 2013

67. राजकिशोर - स्त्री के लिए जगह - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण-1994

68. राजकिशोर - स्त्री, परंपरा और आधुनिकता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002, संस्करण-2010

69. किरण ज्योति - स्त्री संघर्ष और मानवाधिकार - पराग प्रकाशन, कानपूर-208017, प्रथम संस्करण-2013

70. गुप्ता रेणु - हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण-1997

71. पालिवाल, सूरज - हिंदी में भूमंडलीकरण का प्रभाव और प्रतिरोध - शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली- 110032, प्रथम संस्करण-2008
72. 'अरुप' सिंह हरपाल - ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक लोकतांत्रिक चेतना - जवाहर पुस्तकालय, मधुरा (उ.प्र), 2008
73. बेचैन, सिंह शौराज उत्तर सदी के हिंदी कथा-साहित्य में दलित विमर्श अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली - 110002
74. डॉ. नवले, संजय - दलित साहित्य प्रकृति और संदर्भ - अमन प्रकाशन, कानपूर, 2010
75. डॉ. वर्मा, सुजाता - नई सदी और दलित विकास प्रकाशन, कानपूर, 2013
76. गुप्ता, रमणिका - पहली दलित कहानी का जन्म - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2003
77. डॉ. चौहाणा, धनंजय- डॉ. वणकर धीरजभाई - भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना- ज्ञान प्रकाशन, कानपूर, 2010
78. हंचिनाल, मोहम्मदरफी - हिन्दी की चर्चित दलित कहानियाँ-एक मूल्यांकन - रोली प्रकाशन, कानपूर, 2015
79. डॉ. पगारे, सरोज - हिन्दी दलित साहित्य आन्दोलन - विकास प्रकाशन, कानपूर, 2012
80. डॉ. मादार, एल, संजय - अंतिम दशक की कहानियों में चित्रित विभिन्न परिवेश- जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, संस्करण-2012
81. नारायण, बद्री - प्रतिरोध की संस्कृति - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2012
82. मित्तल, सत्यप्रकाश- भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौतियाँ - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी, संस्करण-2003

83. पाण्डेय, मैनेजर - भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2013

84. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - मुख्यधारा और दलित साहित्य - सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2008

85. सं. जे. जयकृष्णन - समकालीन साहित्य में प्रतिरोध - जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, संस्करण-2014

86. शर्मा, सुभाष - संस्कृति और समाज - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013

87. डॉ. सिंह, इंदुमती और डॉ. किरण ज्योति - समकालीन हिन्दी कहानी और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ - आशीष प्रकाशन, कानपूर, संस्करण-2011

88. मेहरोत्रा, ममता - महिला अधिकार - राधाकृष्ण प्रकाशन - नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2017

89. डॉ. कामिनी तिवारी, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श - कानपुर, विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011

90. के. एम. मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य - नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010

91. मधु श्रीवास्तव - आधुनिकता और स्त्री विमर्श - दिल्ली, अवध प्रकाशन, संस्करण 2016

92. कस्तवार,रेखा - स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ - राजकमल प्रकाशन, दूसरी आवृत्ति 2013

93. शर्मा, लता - औरत अपने लिए - सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1991

94. डॉ. व्यागी, मुक्ता - समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श - कानपुर, प्रथम संस्करण 2012

95. के. एम. मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
96. डॉ. वर्मा, कल्पना - स्त्री विमर्श: विविध पहलू - लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2019
97. पाण्डे,मृणाल - परिधि पर स्त्री - नई दिल्ली - राधा कृष्ण प्रकाशन, संस्करण 1996
98. पाण्डे,मृणाल - स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक - दिल्ली, राधा कृष्ण प्रकाशन, संस्करण 1987
99. . डॉ. कपूर - प्रमिला - कामकाजी भारतीय नारी - दिल्ली, संस्करण 1976
100. शर्मा, नासिरा - औरत के लिए औरत - नई दिल्ली - सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2005

पत्र - पत्रिकाएँ

1. अमर, रामसुजान - दलित नव जागरण की दशा-दिशा, हिन्दुस्तान फरबरी 2001
2. चतुर्वेदी, राजीव - 'शोषण के खिलाफ बुलन्द आवाज है दलित साहित्य', दैनिक जागरण, अगस्त 2001
3. जैन, हीरालाल - : 'सामजिक समता के अग्रदूत डा० अम्बेडकर प्रतिपक्ष पेज 23-25
4. डा० तुलसीराम, 'दलित साहित्य की रजनीतिक अवधारण' समकालीन सोच
5. गुप्त मन्मथ नाथ, भारतीय समाज और अम्बेडकर दलित लिबरेशन टुडे अप्रैल, 1997
6. एच. एल, दुसाध - दलित उत्पीड़न और सवर्ण मानसिकता - हिन्दु तान 'कैसे बना यह दस्तावेज' राष्ट्रीय सहारा, जनवरी 2002

वेबसाइट

SL. NO	Website
1	https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/jls11/%E0%A4%A6%E0%A4%B2-%E0%A4%A4-%E0%A4%9A-%E0%A4%A4%E0%A4%A8-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%B0-%E0%A4%9C%E0%A4%A8-%E0%A4%A4/
2	https://www.uttarvarta.com/2017/11/politics_20.html#google_vignette
3	https://www.exoticindiaart.com/book/details/nari-asmita-in-hindi-novels-rzz278/
4	https://www.sbistudy.com/dalit-literature-in-hindi/#google_vignette
5	https://sahityakunj.net/blog/kahaniyon-mein-pratibimbit-dalit-stri#google_vignette
6	https://www.uttarvarta.com/2017/11/politics_20.html
7	https://assignment.ignouservice.in/2022/05/blog-post_880.html
8	https://sahityacinemasetu.com/book-review-dalit-stree-kendrit-kahaniyan/
9	https://m.sahityakunj.net/entries/view/ret-samadhi-kathanak-bhasha-shilp-evam-anuvaad
10	https://www.hindisamay.com/content/5885/1/%E0%A4%AC%E0%A4%9C%E0%A4%B0%E0%A4%82%E0%A4%97-%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B6-%E0%A4%A6%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%A4-%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B6-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82-%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80.cspx
11	https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/jls11/%E0%A4%A6%E0%A4%B2-%E0%A4%A4-%E0%A4%9A-%E0%A4%A4%E0%A4%A8-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%B0-%E0%A4%9C%E0%A4%A8-%E0%A4%A4/

SL. NO	Website
12	https://www.garbhanal.com/dalita-sahitaya-aura-sataree-chitarna-hinadee-tatha-anaya-bharateeya-bhashon-kee-kahaniyon-ka-sandarabha#:~:text=%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82%20%E0%A4%93%E0%A4%AE%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6%20%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A4%BF%20%E0%A4%95%E0%A5%80,%E0%A4%95%E0%A5%8B%20%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A5%87%20%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%BE%20%E0%A4%95%E0%A5%8B%E0%A4%88%20%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A5%80%E0%A4%82%E0%A5%A4
13	https://m.sahityakunj.net/blog/sushila-takbhoure-kii-kahaaniyon-mein-abhivyakt-saamaajik-chetanaa
14	https://www.redalyc.org/journal/7038/703873558015/html/

Avinashilingam Institute for HomeScience and Higher Education for Women
(Deemed to be University Estd. u/s 3 of UGC Act 1956, Category 'A' by MHRD
Re-accredited with A++ Grade by NAAC. CGPA 3.65/4, Category I by UGC
Coimbatore - 641 043, Tamil Nadu, India

Appendix L2

(Item No 5 of Check List) Details of Research Publications

S.No	Article	Journal	Other Details Vol/No/Page No/ Year	Published in UGC-CARE / Scopus Indexed/ Web of Science
1	Dalit kahaniyon mein chitrit Dalit stri ki Abhivyakti	Keral Jyothi	Vol.No: 61, Issue No: 01, page no: 19-20 April 2024	UGC CARE Group I
2	Samajik - Parivarik Dhanche ke khilaf Dalit stri evam pratirodh (Dalit kahaniyon ke Vishesh Sandarbh mein)	Keral Jyothi	Paper Accepted (August 2024) Paper Published in August 2024	UGC care Group I

J. Jyothi 07.11.24

*Proof of list of Journals from Internet to be attached along with copies of reprints.

Scholar :

Supervisor

The scholar Miss. Arunima, A.M (20PHH1F003) has published her article in the following journal: one paper published in April 2024
1. Keral Jyothi, and got acceptance for her paper to be published in August 2024.
This may be considered. J. Jyothi 21.05.24

Checked By:
HoD/Dean of Respective School 21.05.2024

दलित कहानियों में चित्रित दलित स्त्री की अभिव्यक्ति

अरुणिमा ए.एम

हिन्दी में दलित साहित्य लिखने की परंपरा नौवें दशक से शुरु होती है। कुछ लोगों की यह धारणा है कि हिन्दी दलित साहित्य का उद्गम मराठी दलित साहित्य से हुआ है,यानी हिन्दी दलित साहित्य पर मराठी दलित साहित्य की संपूर्ण छाप है। पर ये धारणा पूरी तरह सच नहीं है।हिन्दी दलित साहित्य के उद्भव के पीछे नाथ और सिध्द की भूमिका भी है। सिध्द कवियों में बहुत सारे कवि शूद्र थे,वे अपनी तत्कालीन पीडा का परिप्रकाश किया था।इसके मध्यकाल में निर्गुण संत कवि रैदास ने खुद वर्ण व्यवस्था के शिकार होकर इसके खिलाफ आवाज़ उठायी थी।अतः दलित साहित्य मध्यकाल के निर्गुण संत कवि रैदास और कबीर से शुरु होकर हीराडोम और अछुतानंद तक आयी है। समाज में पिछडे हुए, दबा हुआ जो वर्ग है वही है दलित। यहाँ पुरुष या स्त्री दोनों शोषण की शिकार बनी है। केवल स्त्री से जन्म लिया इसी कारण स्त्री को मानसिक एवं शारीरिक पीडाएँ अधिक झेलनी पड़ी है। समाज में एक नारी को कितनी पीड़ाएँ सहन करनी पड़ती है उससे दो प्रतिशत अधिक दलित स्त्री को सहन करना पड़ता है। दलित नारी ने भी जाति के आवरण से बाहर आकर जिंदगी जीना चाहती थी,अच्छे कपडे पहनना चाहती थी। इसलिए वह भी स्वयं अपनी पहचान के लिए लड़ना शुरु किया। नारी एवं दलित नारियों की कुछ अनकही मानसिक पीडाएँ और उनकी अतिजीवन यात्रा के संबंध में इस लेख में लिखने की कोशिश की है।

दलित कहानियों में सामाजिक परिवेशगत पीड़ाएँ, शोषण के विविध आयाम खुलकर और तर्क संगत रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। ग्रामीण जीवन में अशिक्षित दलित का जो शोषण होता रहा है, वह किसी भी देश और समाज के लिए गहरी शर्मिदगी का सबब होना चाहिए था। वैसे तो संपूर्ण प्रतिरोध का साहित्य है, लेकिन कहानी विधा में विरोध प्रतिरोध का तेवर अपेक्षाकृत ज्यादा मुखर और धारदार होता है। इसका कारण यह है कि आत्मकथा जो कि दलित साहित्य की प्रतिनिधि विधा है, व्यक्तिविशेष का संघर्ष गाथा बन जाती है,कविता कवि का आक्रोश, नाटक स्थितियों का बयान। परन्तु कहानी लेखक, पात्रों, घटनाओं, परिवेश आदि का ऐसा समग्र बिम्ब प्रस्तुत कर देता है कि पाठक के चेतन अवचेतन का हिस्सा बन जाती है। पाठक के रूप में कहानी एक मुहिम और उसका एक पैरोकार तैयार करती है। इस अर्थ में आधुनिक दलित कहानी एक उम्मीद जगाती है, एक भाव-संवेदन का वितान रचती है। दलित कहानी के विकास में पिछली पीढ़ी में ओमप्रकाश वाल्मीकि से शुरू करें तो जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, अनीता भारती, रजनी सिसोदिया, कैलाश वानखेड़े और संदीप मील जैसे कथाकार विरोध-प्रतिरोध का एक विमर्श रचते दिखाई देते है। आधुनिक दलित कहानी में एक नहीं अनेक स्वर है। आज की दलित कहानी में चेतना के धरातल इकहरे नहीं है। दलित कहानी जाती के अलावा, सामाजिक न्याय, साम्प्रदायिक विसंगतियों, प्रशासनिक तालमेल और शोषण के बारीक तंतुओं को भी पकड़ती है। दलित कहानी की कथ्य भूमि पहले से ज्यादा विस्तृत और आन्दोलनधर्मी हुई है। वरिष्ठ लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' जाति व्यवस्था के कुछ अलग स्तरों को दिखाती है।'सलाम' एक साथ जाति-व्यवस्था के कई स्तरों को छूती है। इस कहानी में सवर्ण जाति के कमल उपाध्याय जातिगत उत्पीड़न को झेलता है। एक झटके में ही वह दलित समाज की पीड़ा और दमन का भोक्ता बन जाता है। हरीष पढ़ा लिखा होने के कारण 'सलाम' का विरोध करता है। दलित कहानियों में दलितों के आँसुओं से अनेक जीवन की दुखभरी गाथाएँ दलित लेखकों ने प्रस्तुत की है। इस दलित साहित्य से समाज में चेतना का निर्माण हो रहा है।

कहानियों में चित्रित दलित स्त्री : ओमप्रकाश वाल्मिकि जी का 'यह अंत नहीं' कहानी में एक दलित परिवार में होनेवाले के बारें में व्यक्तकिया है। इस कहानी में बिरमा नामक दलित लड़की के साथ होनेवाले अत्याचार और उसके परिणाम हमें देखने को मिलता है। इस कहानी में गाँव की एक प्रमाणिक का बेटा सच्चिन्दर ने बिरमा को बलात्कार करने की कोशिश की है, उस वक्तबिरमा की भाई किसन और उनका दोस्त शहर से आए थे। बिरमा का भाई किसन शहर में एक कॉलेज में पढ़ रहे हैं। सच्चिन्दर ने बिरमा के साथ जो कुछ भी किया है उस घटना को

सोचकर बिरमा बहुत व्याकुल हो गई और वह उसकी चेहरे से पता चलता था। किसन ने बिरमा की व्याकुलता को देखकर उससे बात की और सब कुछ सुनने के बाद किसन अपने गुस्से को संभाल नही सका। किसन ने अपनी बहन के साथ जो अन्याय हुआ उसके लिए लड़ना शुरु किया। बिरमा के भाई किसन ने पुलिस स्टेशन और पंचायत में जाकर न्याय के लिए लड़ते है। लेकिन कोई फायदा नहीं होता है, पंचायत्तीराज ने सच्चिन्दर को अच्छा बनाकर बिरमा के चरित्र पर सवाल उठाता है। पंचायत्तीराज के मुख्य बताते है कि इस तरह के मामूली केस को लेकर यहाँ मत आओ, बलात्कार थोडी ना किया। यहाँ पर सच्चिन्दर का पिता एक प्रमाणिक हेने के कारण सब लोग सच्चिन्दर के साथ ले लिया। अनपढ़ होते हुए भी बिरमा को अपना भाई किसन और उसके कॉलेज के साथियों की बातचीत सुनकर शोषण को न झेलने की सीख और प्रतिरोध की ताकत मिलती है। एक दलित होने के कारण बिरमा को न्याय नहीं मिला इसके बदले में गाँव के लोगों ने उसे कलंगी स्त्री माना है। लेकिन बिरमा ने आत्मविश्वास के साथ शेष लोगों से कह रहे है कि तुम लोगों ने मेरे विश्वास को जगाया है...इसे मरने मत देना। हिन्दी कहानी में नारी का चित्रण आदिकाल से लेकर अब तक है। रीतिकाल में नारी मात्र विलास की वस्तु थी। आगे चलकर नारी की अस्मिता कहानियों का प्रतिपद्य विषय बना। दलित कहानियों के माध्यम से दुहरा शोषण, बलात्कार, नारी के अस्तित्व का प्रश्न, और दलितों की पूरी तरह के उत्पीड़न का चित्रण किया है।

वरिष्ठ कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का कहानी संग्रह घुसपैठिए में संकलित महत्वपूर्ण कहानी है जंगल की रानी । इस कहानी में दलित स्त्री की निडरता और साहसिकता को प्रकाशित किया है। इस कहानी की नायिका कमली अपने स्म्मान एवं आत्म गौरव को बचाये रखने के लिए अंतिम साँस तक संघर्ष करती है, बाद में लड़ते-लड़ते अपनी जान दे देती है। कमली कभी अपने घुटने नहीं टेकती थी। यह कहानी एक दलित महिला के संघर्ष को मार्मिक ढंग से उठाती है। कमली एक स्कूल में शिक्षिका थी। एक दिन एक डिप्टी साहब प्राइमरी स्कूल का मुआयना करने गाँव आते है। साहब स्कूल का मुआयना कम और स्कूल की शिक्षिका कमली के सौंदर्य का मुआयना अधिक करते है। वह कमली की आंतरिक व बाह्य सौंदर्य से आकर्षित होता है। उनकी चाह कमली को किसी भी तरह हासिल करने में चिंतामग्न थी। डिप्टी साहब ने कमली को फँसाने के लिए एक जाल फेंकता है। उसे ग्रामीण महिला प्रशिक्षण शिविर के लिए शहर भेजता है। वहाँ के एस.पी और विधायक दोनों महानुभवों को भी साहब अपने षड्यंत्र में शामिल करते है। वे तीनों मिलकर उसे बलात्कार करने की पूरी कोशिश की। कमली एक शक्तिशाली संघर्षपूर्ण व्यक्तित्त्व की युवती होने की कारण कमली अपनी अस्मिता तो बचा सकी, किन्तु जान नहीं बचा सकी। अपनी अंतिम साँस तक वह अपने लिए लड़ती थी। बाद में उसकी लाश को नई साड़ी में लपेटकर रेलवे स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर फैंक देते है। अंत में इस सारी घटना को सोमनाथ अखबार में छाप देता है और सभी लोगों को बेनकाब कर लेता है। यहाँ कमली के रूप में दलित वर्ग की स्त्री की स्थिति उजागर होती है और उनके प्रति शासन प्रशासन के अंगों की नीयत का यथार्थ चित्रण भी हुआ है। यहाँ कथाकार ने कहानी के माध्यम से दरिद्र व दलित लड़कियों को बलात्कार व हत्या जैसी घटनाओं की शिकार बनाने की घृणाजनक घटनाओं का भंडाफोड़ किया है। साथ ही दलित बालिकाओं पर किए जाने वाले दुराचारों को समाज के समक्ष यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

सहायक ग्रंथ सूचि

1. गिरिराज शरण, दलित जीवन की कहानियाँ, 2002, प्रभात प्रकाशन,4/19 आसफ अलि रोड, नई दिल्ली 110002
2. डॉ. के.संगीता, नारी चेतना की सार्थक तलाश, 2013, गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एण्ड वितरक सदर बाजार, मथुरा 281001
3. कमलेश कुमार गुप्ता, भारतीय महिलाएँ, शोषण, उत्पीडन, एवं अधिकार, 2005, बुक एनक्लेव, जैन भवन, एन.इ,आइ के सामने, शान्ति नगर, जयपूर 302006
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि, यह अंत नहीं,2016, पेज क्रम- 21-29, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी-17, जगतपुरी, दिल्ली- 110051

डॉ. शोभना कोक्काटन (शोधनिदेशक)

अविनाशिलिंगम इनस्टिट्युट फोर होम सईन्स

एण्ड हयर एजुकेशन फोर वुमेन, कोयम्बत्तूर-641043

E-mail : ponnuarunima7@gmail.com

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित नारी की अभिव्यक्ति

अरुणिमा.ए.एम

दलित साहित्य के उत्थान के लिए समकालीन समय में संगोष्ठी, शोध प्रवृत्तियाँ आदि हो रही हैं। दलित साहित्यकारों ने आलोचना, उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी आदि विधाओं के माध्यम से दलित साहित्य में योगदान दिया है। उसमें से सुशीला टाकभौरे जी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी दलित कथा साहित्य में सुशीला टाकभौरे जी ने नारी चेतना विषय पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। मैंने इस लेख में उनकी निम्नलिखित कहानियों का उल्लेख किया है। अनुभूति के घेरे, टूटता वहम, संघर्ष आदि उनके तीन कहानी संग्रह हैं। इनमें 'टूटता वहम' कहानी संग्रह में संकलित 'सिलिया' कहानी का अध्ययन किया गया है।

सुशीला टाकभौरे जी हिन्दी दलित साहित्य की अग्रणी महिला साहित्यकारों में से एक है। निजी जीवन में सुशीला जी वाल्मीकि जाति की है। जातिवादी, वर्णवादी, विषमतावादी समाज रचना के अनुसार उन्हें अछूत माना जाता था। दलित जातियों के लोग सवर्ण समाज की बस्तियों से दूर, गाँव के बाहर रहते थे। सुशीला जी का घर भी गाँव से दूर था। उन्होंने अनेक चुनौतियों के बावजूद दलित साहित्य पर अपना लेखन जारी रखा। सुशीला टाकभौरे जी साहित्य की विविध विधाओं जैसी कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त किया है।

दलित महिलाओं को दलितों में दलित माना जाता है। इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था और पुरुष प्रधान समाज जिम्मेदार है। एक दलित महिला के जीवन का इतना कड़वा ठोस और वास्तविक अनुभव स्वयं दलित महिला को ही होगा। इतना तो किसी गैर दलित महिला को नहीं मिल सकता। दलित महिलाओं की समस्याएँ आम महिलाओं से बिलकुल अलग होती हैं। समाज में दलित महिलाओं का सर्वाधिक शोषण होता है। दलित महिलाओं को इस जातिगत समाज में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व धार्मिक अधिकार अब भी ठीक से हासिल नहीं हुए है। सुशाला टाकभौरे जी के सन् 1997 में प्रकाशित अनुभूति के घेरे में कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ है। इसमें अधिकतर कहानियाँ दलित नारी से संबंधित हैं।

'सिलिया' एक दलित कन्या की कहानी है। सुशीला टाकभौरे जी ने इसमें समाज में व्याप्त जातिभेद, असमानता की भावना आदि समस्याओं को उठाया है। कहानी के केंन्द्र पात्र सिलिया पढ़ाई करके आत्मविश्वास के साथ अपने समाज को सुधारना चाहती है। एक जाने-माने युवा नेता सेठी जी अछूत कन्या से विवाह करके आदर्श निर्माण करना चाहते है। नई दुनिया अखबार में 'शूद्र वर्ण की वधु चाहिए' विज्ञापन भी छपता है। सिलिया के गाँव के सभी लोग उसकी माँ को सलाह देते है। लेकिन सिलिया की माँ कहती है "नहीं भैया, यह सब बड़े लोगों के चोचले हैं। आज समाज को दिखाने के लिए हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो..... हम गरीब लोग, उनका क्या कर लेंगे। अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर भी हो सकती है। उनकी दिखावें की चार दिन की इज्जत हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान-सम्मान नहीं पा सकेंगी, न ही हमारे घर की रह जाएगी। न इधर की उधर की..... हमसे दूर कर दी जाएगी। हम उसको खूब पढ़ाएँगे - लिखाएँगे, उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान-सम्मान वह खुद पा लेगी.... अपनी किस्मत वह खुद बना लेगी"[1]

सिलिया पढाई बहुत अच्छे से करती थी। सभी गुरुजनों से उसे मान-सम्मान मिलता है। परंतु बचपन में हुए दो घटनाओं को हमेशा वह याद करती है। जब उसकी मामी की बेटी मालती ने कुएँ के पानी पिया था तो मामी ने उसे बहुत मारा था। और दूसरा जब पाँचवीं कक्षा में थी। तो उसने टूर्नामेंन्ट में भाग लिया था। टूर्नामेंन्ट जल्दी खत्म होने के कारण वह अपनी सहेली के घर जाती है। उसकी मौसी ने सिलिया की जाती का नाम सुनने के उपरांत उसे पानी तक नहीं देती है। इन सब घटनाओं में सिलिया बहुत विचार करती है। उसे छुआछूत, जातिभेद, सेठी जी महाशय का

ढोंग आदि अच्छा नहीं लगता है। सिलिया पढ़ लिखकर स्वयं को ऊँचा साबित करती है, और वह अपने समाज को उन्नति की ओर ले जाने के लिए प्रयास करती है। सिलिया ने समाज से जातिभेद मिटाने का प्रयत्न किया है। इस कहानी में जातिभेद, छुआछूत और असमानता की भावना का चित्रण कर शिक्षा का महत्व बताया गया है।

'त्रिशूल' कहानी में दलित नारी जीवन के अंधकार का चित्रण किया गया है। इस कहानी में एक दलित महिला के जीवन का यथार्थवादी चित्रण है। यह एक मनोवैज्ञानिक एवं स्वप्निल शैली में लिखी गई कहानी है। इस कहानी में रेनू को सपना आता है कि वह पार्वती है और उसके प्रिय शिव उसके पास आना चाहते हैं। लेकिन पार्वती उन्हें पास नहीं आने देतीं। क्योंकि उसके पास पार्वती की अपनी पुत्री मोहिनी है। शिवा एक ट्रक में बैठे नजर आ रहे हैं। वह उधर से कहता है- इधर आओ, शहद भी है और गुलाब जामुन भी। लेकिन पार्वती अपनी बेटी के साथ एक मिट्टी के घर में आती हैं। उस घर में कोई दरवाज़ा और खिड़कियाँ नहीं हैं. उस घर के किनारे शिव का धुंधला चेहरा नजर आ रहा है। ये वही शख्स है जो ट्रक में बैठता है।पार्वती उन दोनों के बीच जलती हुई लकड़ियाँ रखकर उनके बीच बाधा पैदा करती हैं। वह चिल्लाती भी है। लेकिन उनकी आवाज गले से नहीं निकलती। रेनू जाग गई। घर, परिवार, बेटा-बेटी, पति के बीच उलझी रेनू अपने सपनों के धागों को सुलझा नहीं पा रही है। यहाँ शिव अपनी पुत्री मोहिनी से कह रहे हैं- 'देखो यहां शहद भी है और गुलाब जामुन भी है', यह प्रेम की भावना का प्रतीक है। ट्रक की ड्राइविंग सीट से शिव का स्वरूप प्रेमी का प्रतीक है।

पार्वती का मिट्टी के घर में जाना रेनू का प्रतिबिम्ब है। रेनू के रूप में पार्वती अपने बच्चों से प्यार करती हैं। अपने बच्चों के प्रति प्रेम की रक्षा के लिए वह अपने प्रिय के प्रेम को अस्वीकार कर देती है। यह रेनू का प्रिय पति नहीं, बल्कि उसका प्रेमी है, जो शादी से पहले उससे प्यार करता था। लेकिन शादी नहीं हो सकी। रेनू के अतृप्त प्रेम की यह अनुभूति स्वप्न के रूप में दृष्टिगोचर होती है। शिव का चेहरा धुंधला है क्योंकि रेनू ने अपने प्रेमी को बीस साल पहले देखा था। प्रतीक के रूप में त्रिशूल भी रखा गया है। रेनू बहुत परेशान है। उसे वह युवक याद आता है जो बीस साल पहले उससे प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था। इस प्रेमी के प्यार की चाहत उसके अचेतन मन में थी, जो स्वप्न के रूप में सामने आ गई है। स्त्री के जीवन में जहाँ सिर्फ धुंध ही धुंध नजर आती है, वहाँ कोई रास्ता या दिशा ढूँढना बहुत मुश्किल लगता है। क्योंकि पितृसत्ता और सामाजिक बेडियाँ इतनी गहरी हैं कि इससे निकलने का रास्ता खोजना मुश्किल है। कहानी की महिला पात्र अपने जीवन के अंधकार को दर्शाती हैं।

'टूटता वहम' कहानी में शिक्षित उच्च जाति और दलित जाति के बीच की मानसिक दूरी को प्रस्तुत किया गया है। आज देश इतना प्रगतिशील हो गया है, फिर भी जातिवाद और छुआछूत की भावना व्याप्त है। इस कहानी में जब लेखिका नागपुर में शिक्षक के पद पर नियुक्त होता है तो संस्था के संचालक बहुत खुश होते हैं। जब भी स्कूल में कोई कार्यक्रम होता है तो बड़े-बड़े मेहमान और वक्ता आते रहते हैं। प्रशासक लेखिका को बाहर से आने वाले प्रत्येक व्यक्तिसे परिचय कराते हुए उनकी जाति के बारे में बताते हैं। लेखक बार-बार जाति का उल्लेख करने के पीछे के उद्देश्य को पहचानता है। एक बार लेखिका ने सभी एसोसिएट प्रोफेसरों को अपने घर पर खाना खाने के लिए आमंत्रित किया। इसलिए केवल चार प्रोफेसर ही आते हैं। उनमें से दो लोग खाना खाने बैठे। ये दोनों भी अनुसूचित जाति से हैं। इसी तरह उन्होंने एक और घटना बताई है कि वह जिस कॉलोनी में रहती हैं, वहाँ उन्हें एक प्लॉट खरीदना था, लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं हैं तो वह अपने पति के सहकर्मी शिक्षक शर्मा जी से प्लॉट का आधा हिस्सा खरीदने की सोचती है। लेकिन शर्मा जी इस बात को टाल देते हैं। इसलिए उस प्लॉट को कोई और खरीद लेता है। लेखिका कहती है - "जब भी हम उस प्लौट के पास से गुज़रते है, उस पर बने मकान को देखकर लगता है, हम भी ऐसा ही मकान बना लेते, यदि हमें धोखे में ना रखा गया होता।"[2]

दलितों के लिए जरूरी है कि वे हिंदुओं की मंशा को पहचानें और अपनी गरिमा और अस्तित्व को पहचानें। इस प्रकार लेखिका ने अपने अनुभव बताने का प्रयास किया है। इसमें दलितों की आवास संबंधी समस्याएँ, भेदभाव की समस्या, भोजन की कमी आदि का चित्रण

किया गया है। यहां समानता के नाम पर झूठा भ्रम दर्शाया गया है। जो दिमाग को और अधिक कष्ट पहुँचाता है और सोचने पर मजबूर कर देता है।

'संभव- असंभव' कहानी में लेखक ने एक शूद्र लड़की और एक ब्राह्मण लड़के की विचारधारा का वर्णन किया है। इस कहानी के माध्यम से समाज में शूद्रों की स्थिति का वर्णन किया गया है। आदर्शों के नाम पर समाज में दलित महिलाओं पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए जाते हैं। न चाहते हुए भी सारी जिंदगी इसी जागरूकता को ढोते रहते हैं। समाज ने सारी बंदिशें सिर्फ महिलाओं के लिए बनाई हैं और वह जीवन भर इन्हें बखूबी निभाती रहती है।

"संभव असंभव' कहानी में समाज में शूद्रों की स्थिति से अवगत कराया गया है। समय बदल रहा है फिर भी विषमतावादी भावनाओं की जड़े अभी बाकी है।"[3]

"आदर्शों की पोटली समाज की जगत पर रखकर शोषित पीडित एक दलित महिला कुएँ में डूबकर मरना चाहती है।"[4] इधर नारी जागृति एवं सामाजिक परिवर्तन के कारण अब वह हताश एवं निराश नहीं है। वह जानती है कि आज के दौर में औरतें मरती नहीं, सामना करती है। इस कहानी में दलित स्त्री इन बंधनों से कुचलकर मरना चाहती है। इसके विपरीत वर्तमान युग में महिलाएँ इन बंधनों को तोड़ने की कोशिश करने लगी हैं। इस कहानी में दलित महिला सभी बंधनों को तोड़कर आगे चलकर जीवन जीना चाहती है। कहानी के अंत में हमें यह संदेश मिलता है कि आज दलित महिलाएँ समाज से लड़कर जीवित रहना चाहती हैं और आदर्शों की गठरी को फेंक देना चाहती हैं।

उनकी कहानियों के अध्ययन से पता चलता है कि समाज में दलितों की क्या स्थिति है। ऊँची जाति के लोग दलितों को अपना सेवक मानते थे। उन्होंने दलितों के साथ मनमाना व्यवहार किया है। लेकिन अब दलित लोग उन्हें अपनी मर्जी से चलने नहीं देना चाहते। उनकी कहानियों में दलित जाति अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती नजर आती है। लेखिका ने अपनी लेखनी से दलित समाज को एक नई दिशा दी है। समसामयिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान को बेहतर बनाना और आने वाली पीढ़ियों के वर्तमान और भविष्य के बारे में सोचना ही इन कहानियों का उद्देश्य है। सुशीला जी ने केवल मनोरंजन के उद्देश्य से कहानियाँ नहीं लिखी हैं। बल्कि दलितों की समस्याओं और महिलाओं की समस्याओं का संकेत किया गया है। वह अपनी कहानियों में कई समस्याओं को चित्रित करने में सफल रही हैं। इसीलिए सुशीला जी की कहानियाँ आधुनिक युग में दलितों और महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानियाँ हैं। उनकी कहानियों का मुख्य उद्देश्य दलितों की पिछड़ी स्थिति और स्त्री-पुरुष समानता का सजीव चित्रण करके पाठकों का ध्यान आकर्षित करना रहा है।

महिला लेखन एक ऐसे समाज की जरूरत है जो महिला लेखिकाओं को ध्यान में रखकर समाज में उनके लिए परिभाषित मूल्यों और मानदंडों को परखता है और गलत मानदंडों को अस्वीकार कर मूल्यों के निर्माण की ओर उन्मुख होता है। कभी-कभी लेखिकाओं को सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, कभी-कभी वे व्यंग्य का निशाना बनते हैं, और कभी-कभी उनके साहित्य का सही अर्थों में मूल्यांकन नहीं किया जाता है। फिर भी महिला चेतना से अभिभूत महिला लेखिकाएं उनके अनुभवों और भावनाओं को चित्रित करना अपना कर्तव्य समझती हैं और आगे कदम बढ़ाती हैं। प्राचीन काल से लोग जिस विकृत सोच को अपनाते आ रहे हैं, उसमें युवा पीढ़ी बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। ऐसी कई समस्याएँ आज महिलाओं की समस्याओं के समान हैं। महिलाएँ न केवल अपने लिए बल्कि समाज के अन्य पिछड़े लोगों के लिए भी रलड़ रही हैं। मेरे विचार से सुशीला जी अपनी कहानियों को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में सफल रही हैं।

संदर्भ ग्रंन्थ सूची

1 डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 61
2 डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 79
3 संघर्ष(कहानी- संभव असंभव), पृ. 115
4 संघर्ष(कहानी- संभव असंभव), पृ. 129

शोध निर्देशिका-डॉ. शोभना कोक्काडन

शोध छात्रा , हिन्दी विभाग
अविनाषिलिंगम इन्स्टिट्यूट फोर होम सयन्स
एन्ड हयर एजुकेशन फोर वुमेन
कोयम्बत्तूर-641043